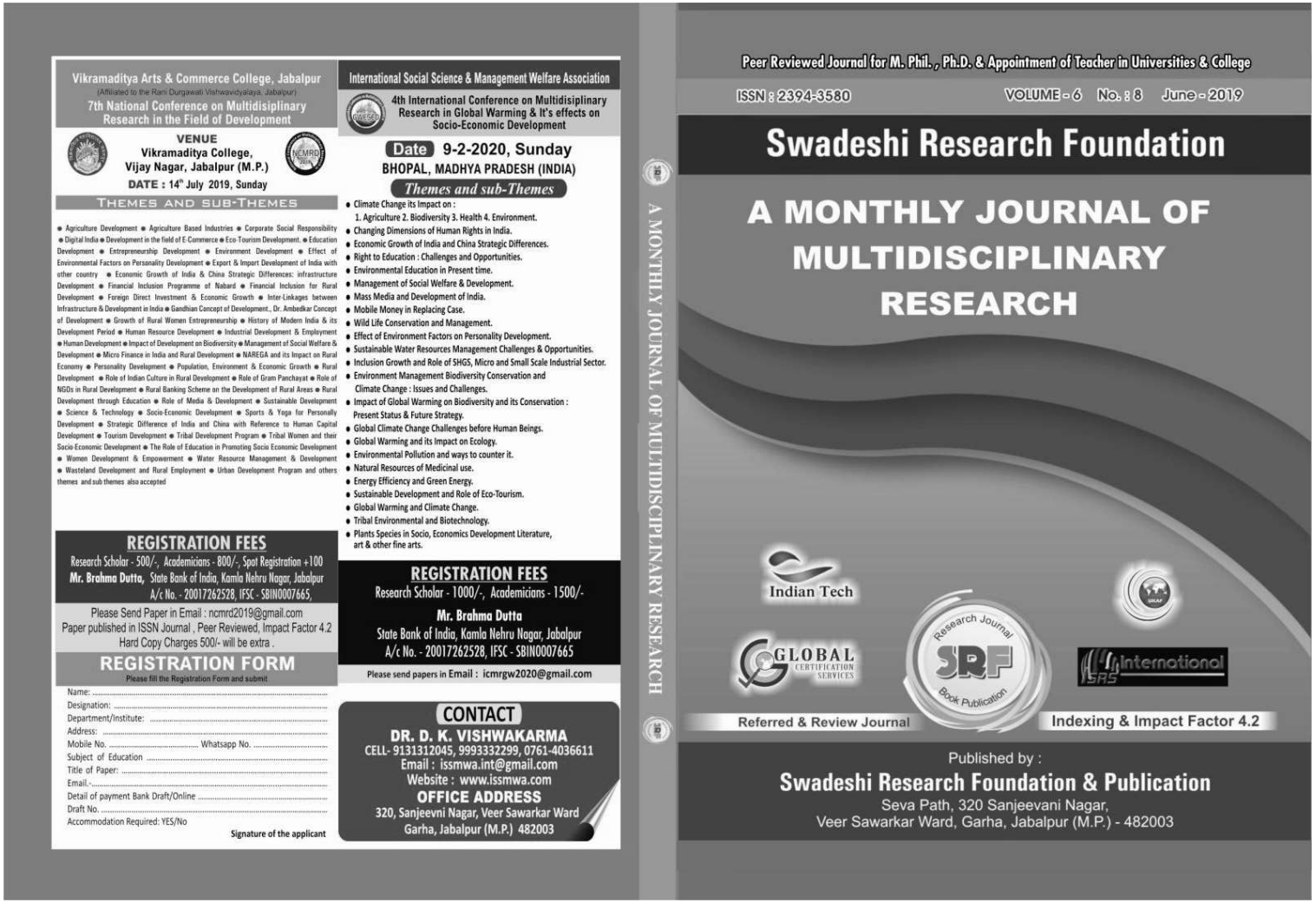

Vikramaditya Arts & Commerce College, Jabalpur
(Affiliated to the Rani Durgawati Vishwavidyalaya Jabalpur)
7th National Conference on Multidisiplinary Research in the Field of Development

VENUE
Vikramaditya College,
Vijay Nagar, Jabalpur (M.P.)
DATE : 14th July 2019, Sunday

THEMES AND SUB-THEMES

● Agriculture Development ● Agriculture Based Industries ● Corporate Social Responsibility ● Digital India ● Development in the field of E-Commerce ● Eco-Tourism Development. ● Education Development ● Entrepreneurship Development ● Environment Development ● Effect of Environmental Factors on Personality Development ● Export & Import Development of India with other country ● Economic Growth of India & China Strategic Differences: infrastructure Development ● Financial Inclusion Programme of Nabard ● Financial Inclusion for Rural Development ● Foreign Direct Investment & Economic Growth ● Inter-Linkages between Infrastructure & Development in India ● Gandhian Concept of Development., Dr. Ambedkar Concept of Development ● Growth of Rural Women Entrepreneurship ● History of Modern India & its Development Period ● Human Resource Development ● Industrial Development & Employment ● Human Development ● Impact of Development on Biodiversity ● Management of Social Welfare & Development ● Micro Finance in India and Rural Development ● NAREGA and its Impact on Rural Economy ● Personality Development ● Population, Environment & Economic Growth ● Rural Development ● Role of Indian Culture in Rural Development ● Role of Gram Panchayat ● Role of NGOs in Rural Development ● Rural Banking Scheme on the Development of Rural Areas ● Rural Development through Education ● Role of Media & Development ● Sustainable Development ● Science & Technology ● Socio-Economic Development ● Sports & Yoga for Personality Development ● Strategic Difference of India and China with Reference to Human Capital Development ● Tourism Development ● Tribal Development Program ● Tribal Women and their Socio-Economic Development ● The Role of Education in Promoting Socio Economic Development ● Women Development & Empowerment ● Water Resource Management & Development ● Wasteland Development and Rural Employment ● Urban Development Program and others themes and sub themes also accepted

REGISTRATION FEES
Research Scholar - 500/-, Academicians - 800/-, Spot Registration +100
Mr. Brahma Dutta, State Bank of India, Kamla Nehru Nagar, Jabalpur
A/c No. - 20017262528, IFSC - SBIN0007665,

Please Send Paper in Email : ncmrd2019@gmail.com
Paper published in ISSN Journal , Peer Reviewed, Impact Factor 4.2
Hard Copy Charges 500/- will be extra .

REGISTRATION FORM
Please fill the Registration Form and submit

Name: .....
Designation: .....
Department/Institute: .....
Address: .....
Mobile No. ..... Whatsapp No. .....
Subject of Education .....
Title of Paper: .....
Email.-.....
Detail of payment Bank Draft/Online .....
Draft No. .....
Accommodation Required: YES/No

Signature of the applicant

International Social Science & Management Welfare Association

4th International Conference on Multidisiplinary Research in Global Warming & It's effects on Socio-Economic Development

Date 9-2-2020, Sunday
BHOPAL, MADHYA PRADESH (INDIA)

Themes and sub-Themes

- Climate Change its Impact on :
  1. Agriculture 2. Biodiversity 3. Health 4. Environment.
- Changing Dimensions of Human Rights in India.
- Economic Growth of India and China Strategic Differences.
- Right to Education : Challenges and Opportunities.
- Environmental Education in Present time.
- Management of Social Welfare & Development.
- Mass Media and Development of India.
- Mobile Money in Replacing Case.
- Wild Life Conservation and Management.
- Effect of Environment Factors on Personality Development.
- Sustainable Water Resources Management Challenges & Opportunities.
- Inclusion Growth and Role of SHGS, Micro and Small Scale Industrial Sector.
- Environment Management Biodiversity Conservation and Climate Change : Issues and Challenges.
- Impact of Global Warming on Biodiversity and its Conservation : Present Status & Future Strategy.
- Global Climate Change Challenges before Human Beings.
- Global Warming and its Impact on Ecology.
- Environmental Pollution and ways to counter it.
- Natural Resources of Medicinal use.
- Energy Efficiency and Green Energy.
- Sustainable Development and Role of Eco-Tourism.
- Global Warming and Climate Change.
- Tribal Environmental and Biotechnology.
- Plants Species in Socio, Economics Development Literature, art & other fine arts.

REGISTRATION FEES
Research Scholar - 1000/-, Academicians - 1500/-
Mr. Brahma Dutta
State Bank of India, Kamla Nehru Nagar, Jabalpur
A/c No. - 20017262528, IFSC - SBIN0007665

Please send papers in Email : icmrgw2020@gmail.com

CONTACT
DR. D. K. VISHWAKARMA
CELL- 9131312045, 9993332299, 0761-4036611
Email : issmwa.int@gmail.com
Website : www.issmwa.com
OFFICE ADDRESS
320, Sanjeevni Nagar, Veer Sawarkar Ward
Garha, Jabalpur (M.P.) 482003

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Peer Reviewed Journal for M. Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2394-3580 VOLUME - 6 No. : 8 June - 2019

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Indian Tech
GLOBAL CERTIFICATION SERVICES
Research Journal SRF Book Publication
International

Referred & Review Journal
Indexing & Impact Factor 4.2

Published by :
Swadeshi Research Foundation & Publication
Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	लाड़ली लक्ष्मी योजना और बालिका विकास (धार जिले के संदर्भ में)	जगदीश मुवेल	1-3
2	विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास दीवार में एक खिड़की रहती थी का वस्तुगत अध्ययन	डॉ. श्रीमति बबीता वर्मा	4-5
3	भील जनजाति में महिला उत्पीड़न का समाजशास्त्रीय अध्ययन (धार जिले के विशेष सन्दर्भ में)	मनीष पांडेय	6-9
4	देश में व्याप्त मानव तस्करी	डॉ. द्रवेश भंडारी	10-11
5	भारिया जनजाति की जीवनशैली में आये परिवर्तनों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव म.प्र. के छिंदवाड़ा जिले में स्थित पातालकोट क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में	ताजबी कुरैशी	12-18
6	संगठित क्षेत्र में महिला रोजगार स्थिति का अध्ययन	आरती घुपकरिया	19-25
7	सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय चेतना	मनीषा पटेल डॉ. अरुण मिश्र	26-27
8	विद्यार्थियों के आत्म प्रत्यय का उनके विश्लेषणात्मक क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन	श्रीमती हीरा कुमारी डॉ. (श्रीमति) के.के. दुबे	28-29
9	त्रिस्तरीय सहकारी साख संरचना के सेतु, राज्य सरकार और नियामक	नीलमेघ चतुर्वेदी डॉ. अखिलेश कुमार सिंह	30-32
10	छठी शताब्दी ईसा पूर्व के सामाजिक–धार्मिक आंदोलनों का प्रभाव (प्राचीन भारत के विशेष संदर्भ में)	प्रियंका तिवारी	33-36
11	स्थूल शरीर के लिए आहार की आवश्यकता	डॉ. लालजीत पचौरी	37-40
12	मथुरा के बौद्ध स्मारक	राजहंस यादव	41-45
13	मनरेगा : स्वच्छ पर्यावरण गांधीवादी विचारधारा	डॉ. रविदास अहिरवार	46-49
14	खुदरा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश	चक्रपाणि त्रिवेदी	50-55
15	श्रीमद्भागवत में जीवन मूल्य	श्री अवधेश कुमार द्विवेदी प्रो. के.बी. पण्डा	56-57
16	मण्डला जिले के अनुसूचित जनजातियों के सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास का भौगोलिक अध्ययन	शिवेन्द्र कुमार धुर्वे डॉ. शिव कुमार दुबे	58-69
17	दमा का योग उपचार	डॉ. मनोज कुमार शर्मा	70-75
18	भारत में डिजिटलीकरण एवं उद्यमिता विकास	डॉ. नुपूर निखिल देशकर प्रीति साकेत	76-78

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 6, No. - 8 June 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

मण्डला जिले के अनुसूचित जनजातियों के सांस्कृतिक एवं सामाजिक विकास का भौगोलिक अध्ययन

शिवेन्द्र कुमार घुर्वे
शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. शिव कुमार दुबे
प्राध्यापक, पं. शम्भूनाथ शुक्ल शास. स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, शहडोल (म.प्र.)

शोध सारांश :– अनुसूचित जनजातीय सास्कृतिक एवं सामाजिक संरचना को सामान्यत: सामाजिक संगठन का समानार्थी माना जाता है। समाज की विभिन्न इकाईयां एवं तत्वों के परस्पर सहयोग को हम सास्कृतिक एवं सामाजिक संगठन कहते हैं। सास्कृतिक एवं सामाजिक संगठन विभिन्न इकाईयों तत्वों उनके पीछे के कार्यकाल, उनकी प्रस्थिति, समन्वय सूत्र एवं समाज के नियत्रण पद्धति को सामाजिक संरचना कहा जाता है, अर्थात् समाज में प्रचलित सामाजिक आदर्श, नियम और कार्य विधियां, विभिन्न प्रकार के साध्यम जैसे परिवार, समिति, समुदाय, वर्ग, धर्म आदि तथा आचरण के प्रतिमान जैसे – भाषा, वेशभूषा, शिष्टाचार के मानक, विश्वास, प्रवृत्तियां कार्य करने के तरीके आदि जब एक दूसरे से सार्थक रूप से सम्बन्धित हों, सभी व्यक्ति निश्चित स्थिति रखते हों और उसके अनुरूप उपयोगी भूमिकाओं का निर्वाह करते हों, तो इस स्थिति में समाज का जो स्वरूप समझ में आता है। मण्डला जिले की सास्कृतिक, सामाजिक एवं भौगोलिक पर्यावरण, स्थिति एवं विस्तार, जनसंख्या, साक्षरता, अर्थव्यवस्था, जलवायु, परिवहन एवं संरचना, नदियां, मिट्टी, वनस्पति, उद्योग धन्धे, जीव–जन्तु इत्यादि का संक्षिप्त सूचनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना :– अनुसूचित जनजातीय समाज में स्थापित उन व्यवहारों से है जो यह निर्धारित करते हैं कि वहां के संस्कृति के अंतर्गत क्या अपेक्षित है तथा क्या अपेक्षित नहीं है। सामाजिक आदर्श के अंतर्गत सामाजिक मूल्य, जनरीतियों, रूढ़ियां, परंपराये तथा कानून सम्मिलित रहते हैं। आदर्शात्मक व्यवहार दो प्रकार के होते हैं –

1. सकारात्मक अर्थात् वे व्यवहार जिन्हें अपनाने की अपेक्षा रखी जाती है।
2. निषेधात्मक अर्थात् व्यवहार जिन्हें न करने की अपेक्षा समाज रखता है।

अनुसूचित जनजातीय समाज का अस्तित्व शान्ति एवं व्यवस्था पर निर्भर करता है। इस दृष्टि से समाज के सदस्यों में सहयोग की भावना तथा सामाजिक आदर्शों के प्रति सहमति होना आवश्यक है। समाज के व्यापक हित में वैयक्तिक इच्छाओं या वासनाओं पर नियत्रण रखा जाना आव यक होता है, चूंकि समाज में भिन्न–भिन्न योग्यताओं, क्षमताओं, इच्छाओं, आकांक्षाओं और मनोवृत्तियों के लोग होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में साकारात्मक एवं नाकारात्मक दोनों प्रकार की प्रवृत्तियां मात्रात्मक भेद के साथ विद्यमान रहती हैं। स्नेह, साहचर्य, सहयोग, समन्वय, सहानुभूति, समर्पण, दया, प्रेम, करूणा आदि के साथ ही साथ स्वार्थ, लोभ, क्रोध और अहंकार के तत्व भी मानव समूह में विद्यमान होते हैं। मनुष्य की नकारात्मक प्रवृत्तियां सास्कृतिक, सामाजिक संगठन व्यवस्था मे बाधक बनती हैं। सास्कृतिक, सामाजिक नियंत्रण का विकास इन्हीं प्रयासों से होता है। अनुसूचित जनजातीयों के व्यवहारों को मान्य प्रतिमानों के अनुकूल बनाता है या जिसके द्वारा समूह के सदस्यों को अपने अनुकूल बनाता है। सास्कृतिक, सामाजिक नियंत्रण मोटे तौर पर समूह में एकता स्थापित करना है। सामाजिक संगठन में स्थिरता उत्पन्न करता है, सहयोग को प्रोत्साहित करता है, प्रश्रय देता है, संस्थाओं की रक्षा करता है तथा समाज में सुरक्षा की भावना को जागृत करता है।

अनुसूचित जनजातीय समाज में व्यक्ति के व्यवहारों को नियमित एवं विपथगामी व्यवहार को नियंत्रित परिसीमित करने के लिए एक व्यवस्था होती है। जो सामाजिक आदर्शों का संरक्षक होती है, जो आवश्यकतानुसार समाज के सभी व्यक्तियों के लिये विधान बनाती हैं, उसका अनुपालन करवाती है और प्रतिकूल आचरण करने वाले को दण्डित भी करती हैं, जिसके कारण सामाजिक संगठन बना रहता है, सामजिक व्यवस्था बनी रहती है और प्रकारांतर से समाज का अस्तित्व भी सुरक्षित रहता है। इसके लिये

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	भारतेन्दु युगीन काव्य में राष्ट्रीय चेतना	पायल लिल्हारे	1-3
2	निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2010 देश के विकास के लिए पूर्ण अधिनियम	डॉ. द्रवेश भंडारी	4-6
3	विद्यार्थियों की वैज्ञानिक प्रवृत्ति का उनके विश्लेषणात्मक क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन	श्रीमती हीरा कुमारी डॉ. (श्रीमति) के.के. दुबे	7-9
4	महिला आरक्षण समस्या : पंचायत, नगर निकाय और सहकारी संस्थाएं – समाधानात्मक सुझाव	नीलमेघ चतुर्वेदी सुप्रिया गुप्ते	10-12
5	भूमण्डलीकरण एवं विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की अवधारणा	Mrs. Kiran Sachdeva	13-20
6	भारत में धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन	प्रियंका तिवारी	21-26
7	योग के द्वारा स्त्रियों में ल्यूकोरिया (श्वेत प्रदर) तथा योनि संक्रमण रोग का प्रबंधन	डॉ. लालजीत पचौरी	27-31
8	भक्ति ज्ञान का अन्योन्यसम्बन्ध	श्री अवधेश कुमार द्विवेदी प्रो. के.बी. पण्डा	32-33
9	अनुसूचित जनजातियों के सांस्कृतिक आर्थिक विकास का भौगोलिक अध्ययन (डिण्डौरी जिले के संदर्भ में)	शिवेन्द्र कुमार धुर्वे डॉ. शिव कुमार दुबे	34-49
10	मस्तिष्क रचना व मानसिक रोगों का योगिक उपचार	डॉ. मनोज कुमार शर्मा	50-52
11	बालाघाट जिले में स्वास्थ्य सुविधाएं एवं बैगा जनजाति के उत्थान के लिए चलाई जा रही शासकीय योजनाओं का भौगोलिक विश्लेषण	मीनाक्षी मेरावी डॉ. सुमनलता पुरोहित	53-65
12	वर्तमान में हिन्दी भाषा की प्रासंगिकता	डॉ. संगीता त्यागी	66-67
13	सीहोर में महाकुमार का राज्य	ज्ञानप्रकाश सिंह यादव	68-69
14	ग्रामीण एवं नगरीय स्नातक महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता का अध्ययन	डॉ. सुभाष कुमार सोनी	70-78
15	विश्व व्यापार संगठन के कृषि प्रावधानों का अध्ययन	डॉ. प्रियंका दुबे	79-81
16	अटल बिहारी वाजपेयी की लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति निष्ठा : एक विवेचन	डॉ. चन्द्रकान्ता जैन रामाकान्त	82-86
17	मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका	डॉ. अरुण कुमार मिश्र	87-91

International Journal of Social Science & Management Studies (Peer Reviewed & Refereed Research Journal) I.J.S.S.M.S.
& Impact factor - 3.9 Research Journal
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 5, No. – 5 June 2019

अनुसूचित जनजातियों के सांस्कृतिक आर्थिक विकास का भौगोलिक अध्ययन
(डिण्डौरी जिले के संदर्भ में)

शिवेन्द्र कुमार धुर्वे
शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा
डॉ. शिव कुमार दुबे
प्राध्यापक, पं. शम्भूनाथ शुक्ल शास. स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, शहडोल (म.प्र.)

शोध सारांश :– किसी विषय के अध्ययन एवं शोध कार्य में प्रयुक्त विभिन्न विधियाँ उनके विषय वस्तु को सुनिश्चित कर वैज्ञानिक विश्लेषण में सहायता करती है। जिससे उसकी स्पष्टता, प्रभावकता एवं सेचकता मे वृद्धि होती है, साथ ही इन विधियों के प्रयोग से शोध कर्त्ताओं, नियोजकों एवं अध्येताओं के कार्य सुगम होते हैं। अतः मध्यप्रदेश के अनुसूचित जनजातियों के सास्कृतिक विकास पर आदिवासी विकास कार्यक्रमों के प्रभाव का विश्लेषण के सन्दर्भ में अध्ययन की सरलता एवं वैज्ञानिक विश्लेषण में विभिन्न सांख्यकीय विधियों एवं अनुसंधान पद्धतियों का उपयोग किया जाता है। अनुसूचित जनजतियों का सामाजिक स्तर, रहन सहन, खान पान, रीति–रिवाज, धार्मिक मान्यताएँ तथा आर्थिक स्तर के अंतर्गत, प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक एवं अन्य आर्थिक क्रियाऐं, जनजातीय पर्यावरण अवस्थित शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, सरकार की विभिन्न आदिवासी विकास से सम्बन्धित कार्यक्रम एवं योजनाए से, योजनाओं के कियान्वयन की स्थिति तथा विकास कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन एवं विश्लेषण करने हेतु क्षेत्रीय सर्वेक्षण विधि से प्राप्त प्राथमिक आंकडों का संकलन एवं सृजन कर सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग के साथ क्षेत्रीय विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना :– भारत एक विशाल देश है, जो अपनी भौगोलिक विविधिता एवं क्षेत्रफल के कारण संपूर्ण विश्व में सॉतवा स्थान रखता है, जहाँ विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय एवं प्रजाति के लोग निवास करते हैं। भारत को धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रजातीय एवं जातिगत विविधिता के कारण विभिन्न प्रजातियों का अजायब घर कहा गया है। भारत के मध्य भाग मे स्थित मध्यप्रदेश देश का एक महत्वपूर्ण प्रदेश है, जहाँ संपूर्ण भारत की कुल जनजातीय जनसंख्या का 22.06 प्रतिशत जनजाति मध्यप्रदेश में निवास करती है। प्रदेश की कुल जनसंख्या में 20.27 प्रतिशत आबादी अनुसूचित जनजातियों की पायी जाती है। भारत में वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग दस करोड़ अनुसूचित जनजाति की आबादी अकेले मध्यप्रदेश में है। इस प्रकार प्रदेश में सर्वाधिक प्रकार की अनुसूचित जनजातियों की संख्या है, यहाँ कुल 47 प्रकार की अनुसूचित जनजाति वैधानिक रूप से वर्तमान में सूचीबद्ध है।

मध्यप्रदेश के विभिन्न पठारों में अनेक प्रकार की अनुसूचित जनजातियों का संकेन्द्रण है, उन्हीं में से अध्ययन का क्षेत्र डिण्डौरी अपनी जातिगत जनसंख्या एवं जनांकिकीय विशेषताओं के सम्बंध में विविधिता लिए हुए है। मण्डला – डिण्डौरी पठार में अनुसूचित जनजाति की दृष्टिकोण से यहाँ बैगा, गोंड, अगरिया, पनिका, खैरवार, भारिया, कोल आदि प्रमुखता से निवास करती है। इस क्षेत्र की सबसे प्रमुख एवं बडी जनजाति बैगा,गोंड जनजाति है।

मध्यप्रदेश के डिण्डौरी जिले में आने वाले सभी 9 विकासखण्डों में सभी प्रकार की अनुसूचित जनजातियों का संकेन्द्रण पाया जाता है। यहाँ कुल जनसंख्या का 50.18 प्रतिशत आबादी अनुसूचित जनजाति की है। यहाँ की जनजातियाँ राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण से अत्यंत पिछड़ी हुई है, इनके समग्र विकास के लिए सभी शासकीय प्रयास एवं आदिवासी विकास कार्यक्रमों के कियान्वयन के बाद भी स्थिति में अपेक्षाकृत बदलाव नहीं आया।

डिण्डौरी की अनुसूचित जनजातियों में निरक्षरता, अशिक्षा, कुपोषण जनित बीमारियाँ, निर्धनता, भुखमरी, खाद्य उपलब्धता की समस्या, जनाधिक्य की समस्या, आवास समस्या, अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियाँ, धार्मिक मान्यताऐं, परम्परागत रीतिरिवाज, जल संसाधन की अनुपलब्धता तकनीकी एवं राजनैतिक समस्या को शोध के माध्यम से प्रकाश में लाने का एक प्रयास है।